माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन

शोध निर्देशिका

डॉ$_0$ बीना कुमारी

एम.ए., एम.एड., एम.फिल., पी–एच.डी.

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग

धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

शोधार्थी

विवेक सारस्वत

एम.ए. (शिक्षाशास्त्र)

आज के बालक को देश का भावी सुयोग्य नागरिक बनाने की जिम्मेदारी परिवार, विद्यालय एवं समाज की है। किन्तु पारिवारिक परिवेश की अपेक्षा विद्यालयी परिवेश में अध्ययन की आदतों, संवेगों की परिपक्वता तथा नैतिक मूल्यों को विकसित एवं परिष्कृत करने की अद्‌भुत सामर्थ्य होती है। भारतीय समाज आज मूल्यों की त्रासदी से गुजर रहा है। यह संक्रमण काल है जिसमें आवश्यक है कि छात्र अनौपचारिक एवं आनुषंगिक रूप से जो सीख रहे हैं, उसका सामाजिक, राष्ट्रीय एवं दैनिक जीवन में महत्व होना चाहिए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध समस्या निम्नवत् है :–

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ तथा उद्‌देश्य अग्रलिखित हैं :–

शोध उद्‌देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्‌देश्य निरूपित किये गये हैं :–

उद्‌देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्‌देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की संवेगात्मक अस्थिरता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके संवेगात्मक प्रतिगमन (इमोशनल रिग्रेशन) पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करनका।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के सामाजिक कुसमायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व सम्बन्धी विघटन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी स्वतंत्राविहीनता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की झूठ बोलने की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के बेईमानी की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी चोरी करने की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी धोखाधड़ी की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायें

शोध परिकल्पनायें, किसी शोध में दिशा निर्देशक का कार्य करती हैं। यह किसी शोध समस्या का टेन्टेटिव उत्तर होती हैं। प्रस्तुत शोध में शून्य परिकल्पना का परीक्षण एवं अनुप्रयोग किया जा रहा है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पनाः

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के संवेगात्मक अस्थिरता पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिगमन (इमोशनल रिग्रेशन) पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

शोध परिकल्पनाः

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके व्यक्तित्व सम्बन्धी विघटन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी स्वतंत्रता की कमी के कारण उत्पन्न संवेगात्मक सहिष्णुता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके नैतिक मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी झूठ बोलने की प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी बेईमानी की प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी चोरी करने की प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी धोखाधड़ी की आदत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद अलीगढ़ के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली से सम्बद्ध इण्टरमीडिएट कॉलेजों में अध्ययनरत कक्षा–9 के उन छात्रों पर किया गया है, जो वर्ष 2009 की वार्षिक परीक्षा में कक्षा–9 के प्रमाण–पत्र हेतु सम्मिलित हुए थे। अर्थात् प्रस्तुत शोध का समग्र जनपद अलीगढ़ के उन विद्यार्थियों से निर्मित किया गया है, जो सी0बी0एस0ई0 द्वारा मान्यता प्राप्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में वर्ष 2009 के अन्तर्गत कक्षा–9 में अध्ययनरत थे।

है। सम्बन्धित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से उक्त छात्रों एवं छात्राओं के नाम व पते एकत्रित कर 1300 चिट तैयार की गयीं। इन चिटों को एक पात्र में डालकर दैव निदर्शन पद्धति के अन्तर्गत एक बालक[10] के द्वारा 600 पर्चियाँ निकलवायीं तथा उन्हें सारणीबद्ध किया। प्रस्तुत आँकड़ों को सारणी संख्या 3.3 में प्रदर्शित किया गया है।

निदर्शित सूचनादाताओं का कालेजवार विवरण

क्रमांक	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएँ	योग
1.	सेण्ट फिदेलिस स्कूल, अलीगढ़	50	68	118
2.	विजडम पब्लिक स्कूल, अलीगढ़	52	61	113
3.	हेरिटेज पब्लिक स्कूल, अलीगढ़	45	68	113
4.	इंग्राहम इन्स्टीट्यूट, अलीगढ़	39	45	84
5.	कृष्णा इण्टरनेशनल स्कूल, अलीगढ़	34	56	90
6.	ब्रिलिएण्ट पब्लिक स्कूल, अलीगढ़	29	53	82
	कुल योग	**249**	**351**	**600**

शोध समस्या के चरों को दृष्टिगत रखते हुए इन मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की उपयोगिता संदिग्ध होने के कारण निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रामाणिक परीक्षणों को उपयोग में लाया गया है :–

1. के0एस0 मिश्र द्वारा निर्मित स्कूल एन्वायरनमेण्ट इन्वेन्ट्री (S.E.I.)

2. वाई0 सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित इमोशनल मैच्युरिटी स्केल (E.M.S.)

4. अल्पना सेनगुप्ता एवं अरुण कुमार द्वारा निर्मित मॉरल वैल्यू स्केल (M.V.S.)

5. शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में संकलित सूचनाओं के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों को प्रयोग में लाया गया है। केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापन हेतु माध्य का प्रयोग किया गया है।

(i) माध्य (Mean)

किसी प्रदत्त संकलन के समस्त अंकों के योगफल को उनकी संख्या से भाग देने पर अंक गणितीय माध्य प्राप्त होता है। सांकेतिक रूप में इसे निम्नवत् प्रदर्शित किया गया है।

$$M = a + \frac{\Sigma f d}{\Sigma f} \times h$$

जहाँ M का तात्पर्य माध्य

a = कल्पित माध्य

d = कल्पित माध्य से विचलन

Σf = बारम्बारताओं का योग

Σfd = विचलन तथा संगत बारम्बारता के गुणनफल का योग

h = वर्गान्तर

वर्गान्तर को वर्ग अन्तराल की उच्चसीमा से निम्न सीमा को घटाकर प्राप्त किया गया है।

(ii) मध्यांक (Median)

किसी समूह के प्राप्ताओं को आकार के अनुसार आरोही क्रम में सजाकर यदि वह बिन्दु प्राप्त किया जाये जिससे आगे तथा पीछे बराबर प्राप्तांक हो तो उसे मध्यांक कहते हैं। अवर्गीकृत आँकड़ों के लिये –

मध्यांक $= \frac{(n+1)}{2}$ वें पद का मान (जहाँ n एक विषम संख्या है)

$$= \frac{\left(\frac{(n}{2}\right) \text{ वाँ पद} \left(\frac{n}{2}+1\right)}{2} \text{ वाँ पद (जहाँ n एक सम संख्या है)}$$

वर्गीकृत आँकड़ों के लिये –

$$\text{मध्यांक} = l + \frac{\left(\frac{n}{2} - CF\right)}{f} \times h$$

जहाँ n = कुल संख्या

l = मध्यांक वर्ग की निम्न सीमा

f = मध्यांक वर्ग की बारम्बारता

CF = मध्यांक वर्ग से पिछले वर्ग की संचयी बारम्बारता

तथा h = वर्गान्तर है

(iii) मानक विचलन (Standard Deviation)

दिये हुये प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलनों के वर्गों के मध्यमान का वर्गमूल मानक विचलन कहलाता है।

$$\text{S.D.} = \left\{\sqrt{\frac{\Sigma f d^2}{N} - \frac{(\Sigma f d)^2}{N}}\right\} \times h$$

जहाँ S.D. = मानक विचलन

h = वर्गान्तर

Σfd^2 = विचलनों के वर्ग एवं आवृत्तियों के गुणनफल का योग

Σfd = आवृत्तियों एवं विचलनों के गुणनफल का योग

तथा N = प्राप्ताकों की संख्या है।

(iv) सह सम्बन्ध (Correlation)

दो या दो से अधिक चर राशियों, घटनाओं या वस्तुओं के पारस्परिक सम्बन्ध को सह–सम्बन्ध कहते हैं। गिलफोर्ड के अनुसार, ''सह–सम्बन्ध गुणांक वह अकेली संख्या है जो यह प्रकट करती है कि दो वस्तुएँ किसी सीमा तक एक दूसरे के साथ सम्बन्धित हैं तथा एक के परिवर्तन के कारण दूसरे के परिवर्तन को किस सीमा तक प्रभावित करती हैं।''

सह–सम्बन्ध की गणना विमा दो विधियों द्वारा की जाती है –

(a) स्थान क्रमविधि :

$$P = 1 - \frac{6\Sigma d^2}{N(N^2-1)}$$

(b) वास्तविक मध्यमान विधि :

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \, \Sigma xy^2}}$$

(v) t की गणना

प्रतिदर्श की संख्या 30 से कम होने पर अर्थात् समूह होने पर cr के स्थान पर t की गणना की जाती है जिसके लिये निम्न सूत्र प्रयोग किया गया है –

$$t = \frac{M_1+M_2}{\sqrt{\frac{\Sigma d1^2+\Sigma d2^2}{N_1+N_2+\ldots\ldots\ldots}\left(\frac{N_1+N_2}{N_1N_2}\right)}}$$

यहाँ M_1, M_2 तथा d_1, d_2 पूर्ववत् अर्थ में प्रयोग किये गये हैं।

इस प्रकार शोध प्रबन्ध में सांख्यिकीय विधियों का उचित प्रयोग किया गया है। यथा स्थान बारम्बारता वक्र, बहुभुज, पाई चार्ट आदि का भी प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को आरम्भ में क्रमवार प्रस्तुत किया गया था। उसी क्रम में शोध निष्कर्षों की प्राप्ति आगे प्रस्तुत की जा रही है :–

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता को प्रभावित करता है। विद्यालय में जब अध्यापक प्रधानाचार्य के कथनानुसार कार्य करते हैं। सहायक अध्यापकों के कथन के अनुसार कार्य करते हैं। पूरा विद्यालय तन्त्र एक दूसरे का सहयोग करता है तो विद्यार्थी इस समन्वय से सीखते हैं तथा संवेगों पर नियन्त्रण कर पाते हैं।

उद्देश्य :

विद्यालय परिवेश का विद्यार्थियों की संवेगात्मक अस्थिरता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की संवेगात्मक अस्थिरता पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आँकड़ों को व्यवस्थित किया गया तथा सम्बन्धित परिकल्पना सारणी में खण्डित की जा चुकी है। अतः निम्न निष्कर्ष प्राप्त होता है।

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की संवेगात्मक अस्थिरता पर प्रभाव होता है।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके संवेगात्मक प्रतिगमन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

शोध परिकल्पना :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिगमन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

उक्त उद्देश्य की प्राप्ति हेतु गणना एवं विश्लेषण में किया गया है तथा सम्बन्धित परिकल्पना ध्वस्त हुयी है।

निष्कर्ष : विद्यार्थियों के संवेगात्मक प्रतिगमन को विद्यालयी परिवेश प्रभावित करता है। जिस प्रकार का संवेगात्मक उद्वेलन विद्यालय परिसर के अन्तर्गत छात्र देखते हैं, वे उससे वैसी ही प्रतिक्रिया करना सीखते हैं।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के सामाजिक कुसमायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यालयी परिवेश विद्यार्थियों के सामाजिक

समायोजन को प्रभावित करता है। जहाँ विद्यालयों में प्रबन्धक, प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों के बीच झगड़े चलते रहते हैं, उन विद्यालयों में छात्र भी एक दूसरे के साथ समायोजित नहीं हो पाते।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व सम्बन्धी विघटन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके व्यक्तित्व सम्बन्धी विघटन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष : उपर्युक्त परिकल्पना अपुष्ट की जा चुकी है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यालय का परिवेश विद्यार्थियों के व्यक्तित्व सम्बन्धी विघटन को काफी सीमा तक प्रभावित करता है। ऐसे उदाहरण सम्भवतः दुर्लभ हैं जहाँ विद्यालय अनुशासित न हो किन्तु विद्यार्थी बहुत अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी स्वतन्त्रता विहीनता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी स्वतंत्रता की कमी के कारण उत्पन्न संवेगात्मक सहिष्णुता पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश में स्वतन्त्रता की कमी के कारण विद्यार्थियों की संवेगात्मक सहिष्णुता प्रभावित होती है। यदि विद्यार्थियों को पूर्ण स्वतन्त्र कर दिया जाये तो वे उच्छंखल हो जाते हैं तथा संवेगात्मक सहिष्णुता में कमी आने लगती है। सूचनादाताओं में बहुत ही कम ऐसे विद्यार्थी पाये गये, जो बिना किसी नियन्त्रण के भी अपने संवेगों को नियन्त्रित कर पाते हों।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनके नैतिक मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

की सारणी में उपर्युक्त परिकल्पना को असत्य सिद्ध किया जा चुका है तथा उद्देश्य 3 की प्राप्ति की गयी है। साक्षात्कार अनुसूची में भी इस आशय की पुष्टि की जा चुकी है। इस प्रकार प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत है –

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर उच्च स्तरीय प्रभाव होता है।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की झूठ बोलने की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी झूठ बोलने की प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

उपर्युक्त परिकल्पना को निरस्त किया जा चुका है। जिसके आधार पर संगत उद्देश्य प्राप्ति हेतु निम्नलिखित निष्कर्ष स्थापित किया जा सकता है।

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश में विद्यार्थियों की झूठ बोलने की प्रवृत्ति प्रभावित होती है। जब छात्रों को ज्ञात होता है कि विद्यालय परिवेश उनके झूठ को स्वीकार नहीं करेगा तो वह अपना आवश्यक कार्य पूरा करने हेतु सजग रहते हैं। वहीं यदि नीरस अध्यापक हो तो छात्र सम्बन्धित विषय की अभ्याय पुस्तिका को बनाना भी आवश्यक नहीं समझते। अतः विद्यालयी परिवेश छात्रों में झूठ बोलने की प्रवृत्ति को नियंत्रित कर सकता है।

उद्देश्य :

विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों के बेईमानी की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी बेईमानी की प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

उपर्युक्त परिकल्पना के संदर्भ में पाया गया कि अधिकांश सूचनादाता विद्यालयी परिवेश में एक भय अनुभव करते हैं तथा बेईमानी करने से कतराते हैं। यह परिकल्पना सारणी में ध्वस्त की जा चुकी है तथा सम्बन्धित उद्देश्य प्राप्त किया गया है। इस सम्बन्ध में निम्न निष्कर्ष निर्धारित किया जा सकता है।

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की बेईमानी की प्रवृत्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी चोरी करने की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी चोरी करने की प्रवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

इस आशय की पूर्ति हेतु आँकड़े व्यवस्थित किये गये हैं तथा उपर्युक्त परिकल्पना निरस्त की जा चुकी है। अतः निष्कर्ष यह है कि –

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की चोरी करने की प्रवृत्ति पर उच्च स्तरीय प्रभाव होता है। विद्यालय के नियम सख्त होने तथा उनके कठोरता से पालन किये जाने की स्थिति में विद्यार्थी विद्यालय में चोरी करना तो दूर विद्यालय की प्रत्येक वस्तु की अपना मानते हुए उसे किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचाने से बचता है।

उद्देश्य :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी धोखाधड़ी की प्रवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी धोखाधड़ी की आदत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित इस अन्तिम परिकल्पना के निर्धारण हेतु आँकड़ों को चतुर्थ अध्याय की अभिव्यक्ति किया गया है तथा परिकल्पना को निरस्त किया जा चुका है अर्थात् विद्यालय परिवेश उत्कृष्ट होने पर छात्र वहाँ किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी नहीं कर सकते, धोखाधड़ी के उदाहरण वहाँ अधिक पाये जाते हैं जहाँ विद्यालय परिवेश क्षतियुक्त होता है। अतः उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्न निष्कर्ष प्राप्त होता है।

निष्कर्ष : विद्यालयी परिवेश का विद्यार्थियों की धोखाधड़ी की प्रवृत्ति पर उच्च स्तरीय एवं सार्थक प्रभाव होता है।

शोधार्थी ने साक्षात्कार अनुसूची के साथ–साथ विद्यालयी परिवेश की प्रत्येक विमा के

सापेक्ष उपर्युक्त चरों की विवेचना यथास्थान चतुर्थ अध्याय में भी है जिसके कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नवत् हैं :–

साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर प्राप्त समंकों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समस्या ग्रसित होने पर विद्यार्थी प्रायः घबराते हैं या किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं किन्तु एक तिहाई छात्र घबराने के स्थान पर समस्या के समाधान का प्रयास करते हैं। समस्या के आने पर अधिकांश अध्यापक समस्या का निवारण करने में सहायता करते हैं किन्तु 20.8% अध्यापक छात्रों की सहायता नहीं करते हैं। विद्यालयों में आवश्यक अनुशासन अपनाया जाता है किन्तु 3.3% विद्यालयों में कोई अनुशासन नहीं अपनाया जाता।

अध्ययन किये जाने वाले विषयों के चयन में 35% अध्यापक सहायता नहीं करते, किन्तु संवेगात्मक परिपक्वता में 89.6% अध्यापकों की सकारात्मक भूमिका रहती है। परीक्षाफल संतोषजनक न होने पर 37.5% अध्यापक दुःखी हो जाते हैं तथा 55% अध्यापक उनका परीक्षाफल बेहतर होने में सहायता प्रदान करते हैं। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होने पर लगभग 96% अध्यापक प्रसन्न होते हैं, वे छात्रों को पारितोषिक प्रदान कर प्रोत्साहित करते हैं तथा प्रत्येक विषय में अलग–अलग अंकों की जानकारी भी प्राप्त करते हैं।

जब अपनी क्षमता एवं योग्यता से छात्र अधिक करना चाहते हैं तो तीन चौथाई से अधिक अध्यापक उनका मनोबल बढ़ाते हैं तथा अन्य दृष्टान्त भी देते हैं। किसी गलत आदत में संलग्न होने पर अध्यापकों द्वारा ध्यान न दिये जाने को 76% छात्र नकारात्मक मानते हैं। छात्रों की प्रगति के सम्बन्ध में 73.8% अध्यापक प्रायः चर्चा करते हैं। किसी विषय में कमजोर होने पर सम्बन्धित अध्यापक 80% तक छात्रों की कमजोरी दूर करने का प्रयास करते हैं। वहीं 14% अध्यापक सम्बन्धित जानकारी को माता–पिता के संज्ञान में भी लाते हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं को लगभग 98% अध्यापक महत्व प्रदान करते हैं।

विभिन्न विमाओं के संदर्भ में किया गया अध्ययन यह दर्शाता है कि विद्यालयी परिवेश की पाँचवी विमा का अध्ययन की आदतों से सीधा एवं प्रभावी सम्बन्ध नहीं होता। इसके अतिरिक्त सभी विमाएँ अध्ययन की आदतों को प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार विद्यालयी परिवेश की तृतीय विमा एवं षष्ठ विमा अध्ययन की आदतों को सार्थक रूप में प्रभावित नहीं करतीं। शेष सभी विमाओं का अध्ययन की आदतों पर सार्थक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। इसी प्रकार विद्यालयी परिवेश की अन्तिम विमा नैतिक मूल्यों को प्रभावित नहीं करती किन्तु

अन्य सभी विमाएँ नैतिक मूल्यों पर सार्थक एवं महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ती हैं।

सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी परिवेश का उनकी अध्ययन की आदतों, संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किये जा चुके हैं, प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शोधोपरान्त निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिनके अवलम्बन में छात्रों में अध्ययन की आदतों को अधिक प्रभावी किया जा सकता है। संवेगात्मक परिपक्वता में निखार लाया जा सकता है एवं नैतिक मूल्यों में सुधार की सम्भावना अधिक की जा सकती है।

(a) विद्यार्थियों के लिये सुझाव

1. विद्यालय में आयोजित होने वाली साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने से व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। अतः प्रत्येक छात्र एवं छात्रा को इन क्रियाकलापों में भाग लेना चाहिए।
2. प्रत्येक छात्र एवं छात्रा को शिक्षण सम्बन्धी एवं विद्यालयीन सम्बन्धी समस्याओं से अभिभावकों एवं प्राध्यापकों को समय–समय पर अवगत कराना चाहिए ताकि उनका समय पर समाधान किया जा सके।
3. छात्रों एवं छात्राओं को विद्यालय परिवेश सुधारने में सहभागिता करनी चाहिए। अपने माता–पिता तथा संरक्षकों के कार्यों में सहयोग करते हुए उन्हें अपनी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। इसके लिए उन्हें अपनी आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रस्थिति तथा अन्य शैक्षिक तथ्यों से विचलित हुए बिना अपना कार्य करना चाहिए।
4. विद्यालय की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर छात्रों एवं छात्राओं को विद्यालय के पुस्तकालय का भरपूर अनुप्रयोग करना चाहिए तथा सरकार द्वारा चलाये गये अनेक शैक्षिक उन्नयन के कार्यक्रमों में सहभागिता करके अपनी शैक्षिक उपलब्धि को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।
5. छात्रों एवं छात्राओं में स्वावलम्बन का भाव जाग्रत होना चाहिए और उन्हें अच्छे समाजोपयोगी कार्य करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। इससे जहाँ एक ओर उनमें तत्परता, आत्मविश्वास बढ़ेगा, वहीं दूसरी ओर वे हीनभावना के शिकार होने से बचेंगे।

6. छात्रों एवं छात्राओं को यह सुझाव दिया जाता है कि वे कोर्स के अतिरिक्त दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं के प्रति जागरूक रहें और भारत में प्रचलित लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति अपने ज्ञान के स्तर को बढ़ायें। यही नहीं उन्हें राष्ट्र स्तर पर क्रियाशील राजनैतिक दलों, उनके चुनाव घोषणा पत्रों, नीतियों, उनके नैतिकता का स्तर, कथनी और करनी में अन्तर आदि को दृष्टिगत रखते हुए अपने मत व्यवहार को निर्धारित करना चाहिए।

(b) प्रधानाचार्यों के लिये सुझाव

प्रधानाचार्य को साप्ताहिक रूप से छात्रों के माता–पिता तथा अभिभावकों को विद्यालय में बुलाना चाहिए और वहाँ उनमें शैक्षिक, सामाजिक तथा अन्य महत्वपूर्ण मूल्यों की स्थापना के प्रयास किए जाने चाहिए। प्रधानाचार्य द्वारा सप्ताह में एक दिन विद्यालय के सभी छात्रों को किसी विषय विशेष पर भाषण आदि देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसमें उनमें आत्म–अनुशासन, सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति सहज प्रवणता तथा आत्मविश्वास का विकास होगा।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा जहाँ छात्रों एवं छात्राओं में अनेक वैयक्तिक मूल्यों का विकास होता है, वहीं विविध शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक आदि मूल्यों का सृजन भी होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा छात्रों एवं छात्राओं में अनेक सामुदायिक मूल्य विकसित होते हैं, जिससे न केवल उनके व्यक्तित्व का विकास होता है, अपितु उनके विद्यालय परिवेश में भी वांछित तथा सार्थक परिवर्तन होता है। अतः खेलकूद, नृत्य, प्रवचन, नाटकों का मंचन, सामान्य ज्ञान परीक्षा, टूर आदि पर जोर दिया जाना चाहिए। ताकि छात्रों एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके और अपने विषयों के अतिरिक्त उन विषयों के प्रति भी रूझान उत्पन्न हो, जो उनके लिए उपयोगी होते हैं।

प्रधानाचार्यों को चाहिए कि वे विद्यालय में एक सुसज्जित पुस्तकालय विकसित करें। इसके लिए छात्रों एवं छात्राओं को अध्ययन के प्रति जागरुक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। आज स्नातक स्तर पर पुस्तकालयों की स्थिति इस प्रकार की है कि कुछ अल्मारियों में पुस्तकें रख दी गई हैं। छात्रों को उन पुस्तकों को पढ़ने का अवसर ही नहीं दिया जाता। शायद ही कोई विद्यालय ऐसा हो, जहाँ दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक पत्रिकायें, मासिक पत्रिकायें आदि छात्रों एवं छात्राओं को पढ़ने के लिए दी जाती है।

(c) अध्यापकों के लिये सुझाव

शिक्षक वह होता है जो अन्तःक्रियाओं के माध्यम से न केवल ज्ञान प्रदान करता है, अपितु अपने छात्रों का सर्वांगीण विकास करता है। अन्तःक्रियायें बहुआयामी होती हैं। कुछ अन्तःक्रियायें छात्र के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती हैं और उसे समाज का सुनागरिक बनाती हैं। लेकिन कुछ अन्तःक्रियायें छात्र के व्यक्तित्व को इस प्रकार से निर्मित करती हैं कि वह समाज के अनुकूल न होकर विपथगामी हो जाता है। अतः यहाँ अध्यापक का दोहरा कर्तव्य बनता है। एक ओर उसे इन कुत्सित अन्तःक्रियायें पर नियंत्रण करना होता है, वहीं दूसरी ओर छात्र को वह उपयोगी अन्तःक्रियाओं के सम्पर्क में लाता है। अतः छात्र के लिए शिक्षक अन्य अभिकरणों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक का कार्य छात्रों एवं छात्राओं में केवल ज्ञान हस्तान्तरित करना ही नहीं है, अपितु अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को हस्तान्तरित करना होता है। अतः इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं :–

1. अध्यापक का व्यक्तित्व गरिमामय होना चाहिए। जिसके गुण, शील, विवेक के सम्मुख हर मस्तक नत हो सके। उसका व्यक्तित्व एवं आचरण उस दीपक की भांति है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। अस्तु सर्वप्रथम शिक्षक को व्यवसायिक मानसिकता से मुक्ति पाना आवश्यक है।
2. अध्यापक को छात्रों एवं छात्राओं के समक्ष सदैव आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उनके व्यक्तित्व में अनेक कमियाँ हो सकती हैं, किन्तु उन कमियों को छात्रों में अन्तरीकृत नहीं होने देना चाहिए।
3. अध्यापक का दायित्व केवल ज्ञान का प्रकाश फैलाना ही नहीं, अपितु राष्ट्र के लिए आदर्श नागरिक तैयार करना भी है। इस दृष्टि से भी शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है।
4. अध्यापक को केवल विषय का ज्ञान ही नहीं देना चाहिए अपितु राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा समाज के अन्दर होने वाली घटनाओं के बारे में भी छात्रों के सामान्य ज्ञान का स्तर उठाने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि ऐसा न करने पर छात्र समाज से विरत हो जाते हैं और उनका अवधान केवल विषय वस्तु तक ही केन्द्रित रहता है।
5. अध्यापकों को वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और

सौन्दर्यात्मक आदि मूल्यों की शिक्षा व्यावहारिक रूप से देनी चाहिए। एक अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मनोविज्ञान का ज्ञाता हो।

शोध संदर्भ

1. वेबस्टर शब्द कोष
2. सामाजिक विज्ञानों का शब्द कोष, 1950
3. पी$_0$वी$_0$ यंग, सामाजिक अनुसन्धान, पृ$_0$सं$_0$ 44
4. पूर्ववत, पृ$_0$सं$_0$ 75
5. जी$_0$ए$_0$ लुण्डवर्ग, सोशल रिसर्च, पृ0सं0 09
6. ऑक्सफोर्ड शब्द कोष
7. एफ$_0$एन$_0$ करलिंगर, फाउण्डेशन्स ऑफ बीहेवरल रिसर्च, पृ$_0$सं$_0$ 382
8. Mouley, G.J., 1963. The Science of Educational Research, p. 231.
9. Best, J.W. Research in Education, p. 102.
10. भारद्वाज, कृष, सासनी गेट, अलीगढ़ (उम्र 9 वर्ष)
11. Lundburg, G.A. op.cit. p. 183.
12. Best, J.W. Research in Education, p. 111.
13. Anderson, G.J., 1968. Effects of Classroom Social Climate on Individual Learning, Dessertation, Hardward University.
14. Ibid., p. 59.
15. Mishra, K.S., 1978. Anti Creativity Climate Creativity, News Letter, 79, 7-8, (2,1), 41, 43.
16. Morgana, C.T., 1957. How to Study, Mc-Graw Hill, New York.
17. Seoul, L.J., 1951. Emotional Maturity, The Development and Dynamics of Personality, London, J.B. Lippincott.
18. Bhargava, M., 2007. Exceptional Children (Hindi), Agra, H.P. Bhargava Book House.
19. Singh, A.K., 1997. Tests, Measurement and Research Methods in Behavioural Sciences, Bharti Bhavan, Patna.
20. Freud, S., 1933. Introductory Lectures to Psychoanalysis, New York, Norton.
21. Pearson, Karl, 1896. The moral Basis of Socialism, University Press of the Pacific, London.
22. Bhargava, M., 2010. Modern Psychological Testing and Measurement (Hindi).
23. Guilford, J.P., 1954. Psychometric Methods, New York, McGraw Hill Book Co.